

आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 27 January, 2022

Website: www.shivbabas.org

धारणा - आज अपना सारा बोझ बापदादा को अर्पित करके बहुत ही हल्केपन का अनुभव करेंगे

आज सत्ताईस जनवरी है। आज हम विशेष ध्यान देंगे कि हमारा मन पूरी तरह से हल्का रहता हो। ऐसा न हो कि हमने अपने सिर पर बोझ रख लिया हो ...

चेक कर ले अपने को कि हमारे सिर पर अनेक गठरिया तो नहीं रखी गई है, कि हमसे चला भी नहीं जा रहा है। हमारी कोमर भी झुक गई है।

हम याद कर ले, जब भगवान सामने खड़ा होकर यह कह रहा है

" बच्चे अपने सारे बोझ मेरे हवाले कर दो "

तो हमें अपना सारा बोझ बाबा को देने में क्या तकलीफ होती है? क्या हम अपने को बुद्धिमान कहेंगे? कि भगवान बोझ मांग रहा है और हम दे ही नहीं रहे?

मनुष्य की ऐसी आदत हो गई है कि ना तो वो इन बोझों को सम्भाल सकता है और न बाबा को देना जानता है? न देना चाहता है?

बार-बार उस चिन्तन में अपने मन को भारी किये रखते है। लेकिन हमें तो फरिश्ता बनना है। फरिश्ता माना ही डबल लाइट। जिसके ऊपर कोई बोझ नहीं हो। मन पूरी तरह हल्का हो।

मन को हल्का रखना यह बहुत बड़ी कला है। सभी लोग अपने मन को हल्का नहीं रख पाते। किसी को तो छोटी छोटी बातें भारी कर देती है। और वह मनुष्य उड़ नहीं पाता। उन्हें योग नहीं लगता। एकाग्रता भंग हो जाती है।

और जो मनुष्य देहधारियों में अटका हुआ है जो कहीं भी अटक गया है किसी देहधारी के पीछे उसकी गति तो अब सम्भव ही नहीं है।

इसलिए अपने को अब कभी भी अटकाना नहीं है। यह अटकाना अब बहुत बड़ा अज्ञान है। कई आत्माओं में दिखा गया है, जो कोई फंस गया है जीवन डिप्रेशन की ओर चला गया। मन निराशा से भरपूर हो गया।

भगवान को अपना जीवन अर्पित करके फिर किसी और को जीवन अर्पित करने की इच्छा रखना महापाप होगा। और यह दुर्गति का मार्ग होगा।

इसलिए हमें बहुत हल्के हो जाना है। और सारा दिन एक्सरसाइज़ करनी है। हल्का होना एक तो ज्ञान बल से सम्भव है। कि हम बोझ बाबा को दे दे।

हम ड्रामा को जानते हुए पास्ट को भूला दे। और भविष्य की चिन्ताओं को छोड़ दे। क्योंकि भविष्य हमारा निश्चित है। और भविष्य हमारा महान है। और हमारा भविष्य तो भगवान के हाथ में है।

लेकिन यदि हम रूहानी ड्रिल करते है तो भी हमारा चित्त हल्का हो जाता है। क्योंकि हमारी आन्तरिक शक्तियाँ बढ़ जाती है।

और जिन छोटी छोटी बातों के कारण हम भारी ही रहे है, हमें एहसास होने लगता है कि यह बातें तो कुछ है ही नहीं। यह बातें तो बहुत छोटी है। कहाँ हम और कहाँ यह बातें? कहाँ शेर और कहाँ कुत्तों का भौंकना। कहाँ शेर और कहाँ जंगल में कांटो का होना?

क्या शेर जंगल की कांटो की परवाह करता है? हमें आभास होने लगता है कि हम बातों से बहुत महान है। बहुत ही ऊपर है।

तो आइये आज सारा दिन हम स्पीचुयाल ड्रिल की प्रैक्टिस करेंगे।

पहले

" मैं आत्मा .. इस देह में अवतरित .. भ्रुकुटी सिंहासन पर विराजमान .. स्वराज्यधिकारी .. मन बुद्धि की मालिक .. मैं राजा हूँ .. निर्भय हूँ .. मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ "

अच्छी फीलिंग के बाद अपने को ले चलेंगे

" सूक्ष्म लोक में .. सामने बापदादा खड़े है .. बाबा के मस्तक में महाज्योती चमक रही है .. बाबा दृष्टि दे रहे है "

और फिर

" बाबा का हाथ पकड़कर उनके साथ रास करेंगे .. एन्जॉय करेंगे प्रभु मिलन के सुखद क्षणों का "

इस अनुभव के बाद चलेंगे परमधाम और

" आत्मा बनकर बैठ जायेंगे सर्वशक्तिमान की किरणों के नीचे .. कभी शान्ति के सागर की किरणों के नीचे .. तो कभी .. पतित पावन के वायत्रेशन्स के नीचे "

फिर ...

" वापिस आयेंगे सूक्ष्म लोक में .. बाबा को सामने देखेंगे .. दृष्टि लेंगे .. बाई बाई करेंगे .. और वापिस प्रवेश करेंगे इस देह में "

एकबार बैठकर यदि पाँच बार अभ्यास कर लिया जाये तो मन की एकाग्रता बहुत बढ़ जायेगी और योग करने में अति आनन्द प्राप्त होगा।

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org